आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ

- डॉ.घीरेन्द्र वर्मा ने एक हजार ईस्वी से आज तक का समय माना है।वर्तमान आ.भा.आर्य भाषाओं का साहित्य में 13वीं शताब्दी ई.के बाद ,तबतक व्यवहार की भाषा विविध अपभ्रंश। लेकिन आविर्भाव 10वीं शताब्दी ई. के लगभग।
- वैदिक ≥ पाली ≥ प्राकृत ≥ अपभ्रंश ≥ आ.भा.आर्य भाषाएँ (हिन्दी,बंगला,गुजराती,मराठी...आदी)

वर्गीकरण-सबसे पहला हार्नल ने बाहरी और भीतरी शाखा कहा।इसी आधार पर ग्रियर्सन-तीन उप शाखा(क)बहिरंग उपशाखा(ख)मध्य उपशाखा(ग)अन्तरंग उपशाखा

डॉ.चटर्जी का वर्गीकरण

(क)उदीच्य- 1.सिन्धी, 2.लहंदा,3.पूर्वी पंजाबी।

(ख)प्रतीच्य -1.गुजराती, 2.राजस्थानी।

(ग)मध्यदेशीय- 1.पश्चिमी हिंदी।

(घ)प्राच्य-1.पूर्वी हिंदी,2.बंगाली,3.बिहारी,4.उडिया,5.असमिया।

(ङ)दक्षिणात्य-1.मराठी।

- 1.सिन्धीः-मूलतः सिन्ध प्रदेश की भाषा,
  - प्राचीनतम संकेत भरत के नाट्यशास्त्र
  - 14वीं सदी से नियमित रूप से साहित्य मिलने लगा
  - शाहजो रिशालो सबसे अधिक प्रसिद्ध रचना
  - प्रसिद्ध कवियों में अब्दुल करीम,शाह लतीफ,सचल, और सामी है।
  - विचोली,सिराइकी,थरेली,लासी,कच्छी प्रमुख बोलियाँ
  - फारसी लिपि का प्रयोग,अपनी प्राचीन लिपि लण्डा है।
  - भारत में गुरुमुखी,अब नागरी लिपि का प्रयोग होता है।

पंजाबी:-फ़ारसी में अर्थ होता है पाँच नदियों का देश(पंज+आब) सतलुज,रावी,व्यास,चेनाब,और झेलम।

- पंजाब क्षेत्र होने के कारण पंजाबी नाम।पूर्वी पंजाब(दिल्ली की ओर का हिंदी तथा उत्तर में पहाड़ी क्षेत्र को छोड़कर) तथा पाकिस्तान-स्थित पंजाब(कुछ भाग छोड़कर)
- बोलने वालों में सिक्खों के कारण इसे सिक्खी,खालसी ।
- कभी-कभी लहँदा और पंजाबी को दोनों को पंजाबी।
- 1921 की जनगणना के आधार पर बोलने वालो की संख्या 16,233,596 थी।
- आ.भा.आर्य भाषाओं में सबसे अधिक पुरानी भाषा।
- सहज ग्रामीण आकर्षण, संस्कृत तथा फ़ारसी से मुक्त
- शुद्धतम रूप अमृतसर के आसपास माझ में जिससे माझी भी कहते हैं
- टाकरी,महाजनी,गुरुमुखी,फ़ारसी,नागरी आदि लिपिओं का प्रयोग आज भारत में गुरुमुखी और पाकिस्तान में उर्दू

- साहित्य में प्रथम कवि बाबा फ़रीद शकरगंज हैं।
- नानक,अर्जुनदेव,गुरुदास तथा हीर-राँझा के लेखक वारिस शाह
- आधुनिक लेखकों में मोहनसिंह,अमृता प्रीतम प्रमुख।
- लोकसाहित्य की दृष्टि से पर्याप्त सम्पन्न।
- कुछ पैशाची या केकय तो कुछ टक्क तो कुछ विद्वानों ने शौरसेनी अपभ्रंश से मानते हैं।

गुजरातीः-

- गुजरात की भाषा और गुजरात का सम्बन्ध गुर्जर जाति से जो मुलतः शक थे। पहले पंजाब एवं राजस्थान में।मुसलमानों के आक्रमण के पश्चात गुजरात में त्राण मिला।
- गुजराती भाषा का प्रथम प्रयोग प्रेमानंद(1641-1714) ने किया।
- गुजराती का सम्बन्ध शौरसेनी अपभ्रंश के दक्षिणी-पश्चिमी रूप से,जिसे उमाशंकर जोशी ने मारू गुर्जर तथा कनैयालाल मुंशी गुर्जर अपभ्रंश कहत हैं। इसे नागर अपभ्रंश भी कहते हैं।

लहँदाः-

- शाब्दिक अर्थ-पश्चिम,सूर्यास्त इसी आधार पर इसे पश्चिमी भी कहता है।प्रचीन काल में मुल्तानी भी कहते थे।
- पश्चिमी पंजाब आज पाकिस्तान में है।
- हिन्दुओं के कारण इसे हिन्दको,जाट के कारण जटकी तथा उच कस्बे कारण उच्ची भी कहते हैं।
- ग्रियर्सन के भाषा सर्वक्षण के अनुसार बोलनेवालो की संख्या 70,92,781थी।
- लहँदा पर सिन्घी तथा कश्मीरी का प्रभाव।
- लहँदा बोलने वाले अधिक मुसलमान होने के कारण फ़ारसी लिपि,हिन्दु लोग लंडा नामक अब उर्दू का बोलबोला है।
- केकय या पैशाची अपभ्रंश से संम्बन्ध से है।

मराठीः-

- प्राचीनतम रूप 488 ई. के मंगलवेड्डे ग्राम के ताम्रपत्र ।
- प्राचीनतम वाक्य 983 ई. के गोमतेश्वर के शिलालेख में।
- 12वीं सदी से साहित्य का प्रारम्भ।
- आदि कवि मुकुन्दराय(1128-1198) जिनका ग्रंथ-विवेकसिंधु।
- संत ज्ञानेश्वर की ज्ञानेश्वरी प्रसिद्ध ग्रंथ।
- नामदेव,तुकाराम,रामदास,एकनाथ आदि प्रमुख कवि।
- कोंकण या कोंकणी सबसे प्रसिद्ध बोली,उपबोलियों में कुंडाली, दालची,तथा चितपावनी आदि।
- मराठी भाषा के लिए देवनागरी लिपि प्रयोग।
- 1961 की जनगणना के आधार पर बोलने वालो की संख्या 33,286,771थी।

उड़िया-

- उड़िसा प्रान्त की इसके अलावा बंगाल के मेदनीपुर,आन्ध्र में टेक्कालि,तरला,इच्छापुर,बिहार में सिंहभूमि,सराइकेला आदि।
- संबंध मागधी अपभ्रंश से

- उड़िया भाषी अपने देश को उड़िसा न कहकर ओड़िशा कहते हैं। स का श करना मागधी की प्रवृत्ति है।
- साहित्य समृद्ध । आदिकाल के कवियों में-लुइपा,शवरीपा मध्यकाल के कवियों में-बलरामदास,जगन्नाथनाथ,पंचसखा, सालवाग आदि।
- उड़िया के कटक की कटकी,आन्ध्र की सीमा पर गजामी प्रमुख बोलियाँ
- उड़िया की अपनी लिपि जो ब्राह्मी की उत्तरी शैली से विकसित है उस पर तेलुगु लिपि का प्रभाव।

बंगाली

- बंगाल का संबंध प्राचीन नाम बंग से है।वहाँ की भाषा बंगाली बनी।
- 1000ई. के आसपास उत्पत्ति।डॉ.चटर्जी साहित्य को प्राचीन काल(950-1200)ख.मध्य काल(1200-1800)तथा आधुनिक काल(1800 से आज तक)

- काशीरामदास,चंडीदास,केकतादास आदि प्राचीन कवि तो बंकिमचंन्द्र,मधुसुदन दत्त, शरतचंन्द्र,रवीन्द्रनाथ ठाकुर आदि आधुनिक साहित्यकार।
- आधुनिक बंगाली साहित्य आधुनिक भारतीय भाषाओं में सबसे सम्पन्न।
- 1931 की जनगणना के आधार पर 5 करोड़38लाख से उपर बोलने वालों की संख्या।
- राजबंगशी,सराकी,खड़िया ठार,पहाड़िया ठार तथा माल पहाड़िया प्रमुख बोलियॉ।

असमीः-

- 13वीं सदी में बर्मा से आकर एक निषाद जाति के लोगों ने कबीला के रूप में राज्य स्थापित किया जो असम है।
- हेमसरस्वती का प्रहलाद-चरित्र प्राचीनतम रुप व पहली रचना

- पीताम्बर,शंकरदेव,माधवदेव तथा सूर्यखरीबलदेव प्रचीन साहित्यकार।
  तिब्बती-बर्मी तथा आस्ट्रिक भाषओं से शब्द-समूह,मूहावरों तथा वाक्य-गठन